

संस्कृत  
१००

मिथि: ~~अथर्व~~  
२१११



महाराष्ट्र पाठ्याने



(1)

॥ अथ नवग्रह जप विधाने गुरु जप विधानं ॥

॥ बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पति स्त्रिदुपुः बृहस्प

॥ तिमंत्र न्यासे विनयोगः ॥ ॐ बृहस्पते जति

॥ यदये अर्हा तं गुष्टाभ्यां नमः ॥ बुभुक्षुः

॥ तितर्जनिभ्यां ॥ क्रतु मज्जनेषु मध्यमां ॥

॥ यदीदयद्यव सव्य नामिकाभ्यां नमः ॥ क्रते

॥ प्रजातकनि ॥ तदस्मा सुद्र विण्धे हि

॥ चित्रं करतळकरवृष्टाभ्यां नमः ॥ एव हृदया

॥ दि ॐ बृहस्पते शीरसि ॥ अतियत्कलोठ

॥ अयो अर्हा तसुखे ॥ दुमतू हृदये विभाति

॥ नाभौ ॥ क्रतु मज्जनेषु रुचां ॥ यदीदयत्

॥ ऊर्गेः ॥ शवसकृत प्रजातजा नोः ॥ तदस्मा सु

॥ अजंघयोः ॥ द्र विण्णु ल्कयोः धे हि चित्रं पाद

॥ योः ॥ बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पति स्त्रिदुपु

॥ लां विजं विभाति शक्तिः ॥ शवसः किल कोजपे

॥ नि नियोगः ॥ देवदैत्य गुरु तदस्मी तस्यै तौ च

॥ तुर्भुजौ हं उ ध्यानं ॥ तौ वरदौ देवौ साक्षसु

॥ न्न क मं उ लू ॥ ॐ लां ली लौ ॐ भू भुवः स्वः ॐ

॥ बृहस्पते ॐ स्व भुव भूः ॐ सः जौ जी जा

॥ ॐ हरिद्रा गंधं ॥ अगस्ती पुष्यं वित्वषू पंद

॥ ध्या ह्ये नैवेद्यं ततो जपरति बृहस्पति ज

॥ प विधानं ॥ ५॥



2) पर तैरिधि पर्वे सुतं । वले नवसक  
सीः रीः ह्य । सविपरेणे सिधे धा ।

वैरुपेण वी पाठ इ विरिदे वये थ  
शा दि नु न व वा ।  
एक विं शार म वी यु ते वं म रे  
श्री का श्री धा इ वी र व य य दं ध  
ह म ते ध ।

अथरा? दानं शक्यं प... नि पा  
देवं देवाय जाय विं का इ मे काः क इ मे प तं  
गाः ॥ मा धा उः क लि प तं गि ॥ आ ना  
ए ते ना न्ने ध मं तु दे वां ॥ श्री  
सु क्ष त्रा ने व जं क र त ॥ आ ति उ द्वा य  
ह र । इ य इ ति व र ॥





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com